vinetur

राइनलैंड-पैलेटिनेट में अंगूर उत्पादकों को बेलें उखाड़ने के लिए प्रोत्साहन राशि

कमज़ोर मांग और बढ़ती लागत से जूझ रहे जर्मनी के एक प्रमुख वाइन क्षेत्र में उत्पादन क्षमता घटाने की योजना के तहत सोमवार से आवेदन शुरू होंगे

रविवार, 8 नवंबर 2026



राइनलैंड-पैलेटिनेट के अंगूर उत्पादक सोमवार, 9 नवंबर से बेलें उखाड़ने के लिए प्रोत्साहन राशि का आवेदन कर सकेंगे। राज्य सरकार कमज़ोर मांग और बढ़ती लागत का सामना कर रहे वाइन बाज़ार में उत्पादन क्षमता घटाने की कोशिश कर रही है।

Rhein-Zeitung ने 7 नवंबर को बताया कि इस उपाय का उद्देश्य उत्पादन क्षमता घटाना है, ताकि आपूर्ति ऐसे बाज़ार की मांग के अनुरूप हो सके जो अब मौजूदा मात्रा को खपा नहीं पा रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, राज्य का वाइन क्षेत्र दबाव में है, क्योंकि उत्पादन लागत बढ़ी है और वाइन का उत्पादन मांग से अधिक हो रहा है।

यह राइनलैंड-पैलेटिनेट में एक गंभीर समस्या बन गई है, जो जर्मनी के प्रमुख वाइन उत्पादक राज्यों में से एक है। देश के

13 वाइन क्षेत्रों में से छह यहीं स्थित हैं, जिससे राष्ट्रीय वाइन कारोबार में राज्य की भूमिका काफी बड़ी है। जब इतने बड़े क्षेत्र के उत्पादकों को अंगूर के बाग हटाने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है, तो इसका असर व्यक्तिगत खेतों से आगे तक जाता है और बाज़ार में व्यापक असंतुलन की ओर संकेत करता है।

अंगूर की बेलें उखाड़ने के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि का इस्तेमाल उत्पादन आधार के एक हिस्से को बाज़ार से हटाने के लिए किया जाता है। इसका मूल उद्देश्य कुछ उत्पादकों को ऐसे भूखंडों पर अंगूर की खेती बंद करने के लिए प्रोत्साहित करना है, जो मौजूदा हालात में आर्थिक रूप से व्यवहार्य न रह गए हों। खेती का रकबा घटाकर अधिकारी अतिरिक्त आपूर्ति कम करने और अतिरिक्त मात्रा से कीमतों पर पड़ने वाले दबाव को घटाने की उम्मीद कर रहे हैं।

रिपोर्ट में इस कार्यक्रम को ऐसे समय में वाइन बाज़ार को राहत देने का एक उपाय बताया गया है, जब उद्योग मंदी के दौर से गुजर रहा है। अखबार के अनुसार, उत्पादन से जुड़ी लागत बढ़ी है, जबकि मांग इतनी घट गई है कि बाज़ार में खरीदारों की खरीद से अधिक वाइन उपलब्ध है। उत्पादकों पर कारोबार के दोनों मोर्चों से दबाव है : खर्च बढ़ा है और बाज़ार के लिए बड़ी मात्रा या स्थिर रिटर्न को सहारा देना मुश्किल हो गया है।

यह नीति राज्य के वाइन क्षेत्र के सामने मौजूद चुनौती के पैमाने को भी दर्शाती है। उत्पादकों को बेलें हटाने के लिए भुगतान करने वाला यह उपाय सिर्फ मौजूदा भंडार बेचने की तात्कालिक समस्या के बजाय भविष्य में क्षेत्र की उत्पादन क्षमता को संबोधित करता है। इससे संकेत मिलता है कि अधिकारियों की नज़र में आपूर्ति और मांग के बीच का असंतुलन केवल अल्पकालिक उतार-चढ़ाव नहीं, बल्कि संरचनात्मक समस्या है।

पेय उद्योग के लिए इस कार्यक्रम का शुरू होना इस बात का संकेत है कि बाज़ार की स्थितियां एक प्रमुख वाइन क्षेत्र को कितनी गहराई से प्रभावित कर रही हैं। समय के साथ यदि अंगूर के बागों का रकबा घटता है, तो इससे वाइनरी, बोतलबंद करने वाली कंपनियों, वितरकों और आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े अन्य कारोबारों के लिए अंगूर की उपलब्धता और वाइन उत्पादन प्रभावित हो सकता है। यह उस राज्य पर पड़ रहे दबाव को भी दिखाता है, जिसकी जर्मनी के वाइन उत्पादन में केंद्रीय भूमिका है।

Rhein-Zeitung की प्रकाशित रिपोर्ट में यह नहीं बताया गया कि बेलें उखाड़ने के कार्यक्रम के तहत अलग-अलग उत्पादकों को कितनी राशि मिल सकती है या आवेदन की अवधि कितने समय तक खुली रहेगी। अखबार की रिपोर्ट में उपाय के उद्देश्य पर ध्यान दिया गया : राइनलैंड-पैलेटिनेट के अंगूर उत्पादकों पर पड़ रहे वित्तीय दबाव, घटती मांग और अतिरिक्त आपूर्ति के जवाब में उत्पादन क्षमता कम करना।